सर्वोदय प्रदर्शनी

रजि० नं० बी ४४४८

हरिजनसेवक

दो आना

(स्थापक: महात्मा गांधी)

भाग १२ सम्पादक — किशोरलाल मशरूवाला अंक ४३

मुद्रक और प्रकाशक
जीवणजी डाह्याभाओ देसाओ
नवजीवन मुद्रणालय, कालुपुर, अहमदाबाद

अहमदाबाद, रविवार, ता० २६ दिसम्बर, १९४८

वार्षिक मूल्य देशमें रु० ६
विदेशमें रु० ८; शि० १४; डॉलर ३

मानव-सेवक

[बम्बअीके 'भारत ज्योति' में कविवर श्री रवीन्द्रनाथ ठाकुरके नीचे दिये हुओ बंगाली गीतका अंग्रेजी अनुवाद कुछ महीने पहले छपा था। अेक भाओीने वह मुझे भेज दिया था। पूज्य बापूजीके विषयमें मानो वह अेक तरहकी आगाही थी। मैंने अुस गीतके बारेमें 'विश्वभारती' (शान्तिनिकेतन) के संपादकसे पूछताछ की और मूल गीत हासिल करना चाहा। अुन्होंने बताया कि गुरुदेवने यह गीत सन १९३९ के नाताल (बड़े दिन) की प्रार्थनाके लिअे खास रचा था और "मुझे याद है कि जब हमारे विद्यार्थियोंने अुसे गाया, तब चार्ली (दीनबन्धु) अेन्ड्रूज़का दिल, जिनकी शायद वह आखिरी बड़े दिनकी अिमामत (प्रार्थनाकी नेतागिरी) थी, कैसा भर आया था। अिस गीतका अंग्रेजी अनुवाद (तरजुमा) श्री अमिय चक्रवर्तीने किया था। और वह जनवरी १९४० के 'माडर्न रिव्यू' में छपा था।"

— कि० मशरूवाला]

अेक दिन यारा मेरे छिल तारे गिये
राजार दोहाअी दिये,
अे युगे ताराअी जन्म निये छे आजि
मन्दिरे तारा ये से छे भक्त साजि।
घातक सैन्ये डाकि,
"मारो मारो" अुठे हाँकि,
गर्जन मेशे स्तव मंत्रेर स्वर।
मानवपुत्र गभीर व्यथाय
कहेन "हे अीश्वर!
अे पानपात्र निदारुण विषे भरा
दुरे फेले दाओ
दुरे फेले दाओ त्वरा॥"

अेक दिन जिन्होंने मारा था,
अपने राजाकी दुहाअी देते हुओ।
अिस युगमें वे फिरसे जन्म ले कर आज
अुसके मंदिरमें जाते हैं भक्तोंके वेशमें॥
(और साथ ही)
अपने सैन्यको जमा कर
"मारो मारो" चिल्ला कर
गर्जनमें मिलाते हैं स्तवन मंत्रोंके स्वर।
मानवपुत्र गंभीर व्यथासे
कहता है "हे अीश्वर!
यह पानपात्र (प्याला) दारुण विषसे भरा।
दूर फेंक दो,
दूर फेंक दो सत्वर॥"

रवीन्द्रनाथ ठाकुर

हिन्दुस्तानकी राजभाषा — सफाओी

'हरिजन' में हालमें मेरे जो लेख छपे हैं, अुनसे खड़े होनेवाले दो मुद्दोंको साफ करनेके लिअे श्री किशोरलाल मशरूवालाने मुझसे कहा है।

१. हाओीकोर्ट, युनिवर्सिटी वगैराकी भाषा

पहले मुद्देके बारेमें वे लिखते हैं:

"हाओीकोर्टोंकी भाषा और युनिवर्सिटियोंकी शिक्षाके माध्यमके सवाल पर क्या मेरा यह समझना ठीक है कि आपकी यह राय है कि दोनों मामलोंमें वह हिन्दुस्तानकी सर्व सामान्य (आम) भाषा होनी चाहिये, न कि प्रान्तकी भाषा?"

ज्यादा विचार करनेसे संभव है मेरी रायमें आगे कोओी फेरबदल हो, लेकिन मेरा आजका मत अिस बारेमें यह है:

१. "जिन फैसलोंके खिलाफ सुप्रीम कोर्टके सामने अपील की जाती है या जो कानूनी रिपोर्टोंमें लेने लायक होते हैं, अुनकी तादाद आम तौर पर बहुत कम होती है। पहले मामलेमें जरूरी कागजोंका — जिनमें हाओीकोर्टके फैसले भी शामिल हैं — हिन्दुस्तानकी सर्वसामान्य भाषामें अनुवाद कराना बहुत मुश्किल नहीं है। वैसे भी छोटी अदालतोंके बहुतसे मूल दस्तावेजों और कार्रवाअियोंके कागजोंका आजकी तरह अनुवाद (तरजुमा) कराना ही होगा। देशकी आम भाषामें अनुवाद करना अंग्रेजीमें अनुवाद करनेसे कहीं ज्यादा सरल है।

"कानूनकी रिपोर्टोंके बारेमें मुझे लगता है कि जो फैसले अुनमें छपने लायक हों, अुनका आम भाषामें ठीक ठीक और सही अनुवाद करानेका अिन्तजाम किया जा सकता है, बशर्ते अुनका अनुवाद न हो चुका हो। रोजाना जो फैसले दिये जायँगे, अुनमेंसे अैसे फैसलोंकी तादाद बहुत कम होगी। अनुवादकी गलतियोंसे बचनेके लिअे या तो साथमें अदालतोंके मूल फैसले भी दिये जा सकते हैं, या दोहरी रिपोर्ट दी जा सकती है — अेक प्रान्तकी भाषामें और दूसरी देशकी आम भाषामें।

२. "लेकिन अिसका यह मतलब नहीं कि हाओीकोर्टोंमें सिर्फ प्रान्तकी भाषा ही चले। हाओीकोर्ट और युनिवर्सिटी दोनोंमें देशकी आम भाषा और प्रान्तोंकी भाषायें अेक सी चलनी चाहियें। युनिवर्सिटियोंके जो प्रोफेसर और विद्यार्थी और अदालतोंके जो वकील और जज प्रान्तकी भाषा बोलें, अुन सबको अुस भाषाका अिस्तेमाल करने देना चाहिये। लेकिन जो लोग दूसरे प्रान्तोंसे आनेवाले हों, अुन्हें देशकी आम भाषामें अपने विचार जाहिर करनेकी आज़ादी होनी चाहिये, हालाँकि अुनसे प्रान्तकी भाषा समझनेकी आशा रखी जायगी। चूँकि प्रान्तके विद्यार्थियों और दूसरे लोगोंसे आम भाषाकी अच्छी और ठोस जानकारी रखनेकी आशा की जायगी (बेशक, आज अुन्हें अंग्रेजीकी जितनी जानकारी है, अुससे कहीं बढ़कर), अिसलिअे अुन्हें

www.vinoba.in

आम भाषा समझनेमें कठिनाअी नहीं होगी । अिससे युनिवर्सिटियों और कानूनी अदालतोंको दूसरे प्रान्तोंके होशियार और काबिल लोगोंसे फायदा अुठानेका मौका मिलेगा । सारे हिन्दुस्तानसे सम्बन्ध रखनेवाले विद्यालयों और युनिवर्सिटियोंको, फिर वे किसी भी प्रान्तमें हों, बेशक देशकी आम भाषा काममें लेनी चाहिये । समय ही अिस बातका फैसला करेगा कि सर्वसामान्य भाषा और प्रान्तोंकी भाषायें बराबरीसे साथ साथ आगे बढ़ती हैं या कुछ हिस्सोंमें आम भाषा प्रान्तकी भाषाओंसे आगे हो जाती है और दूसरे हिस्सोंमें अिसके अुलटी बात होती है । किसी भी हालतमें देशकी आम भाषाकी तरफ लापरवाही नहीं दिखाअी जायगी ।

३. "अिससे कानून बनानेका सवाल भी हल हो जाना चाहिये । अगर सारे हिन्दी संघमें सब कानून मूल रूपमें देशकी आम भाषामें ही पास हों, तो भी आम लोगोंकी जानकारीके लिअे स्थानीय या मुकामी भाषाओंमें अुनका अनुवाद करना जरूरी होगा । युनिवर्सिटीके विद्यार्थियों, वकीलों और दूसरोंसे सर्व सामान्य भाषा पर अच्छा अधिकार रखनेकी अुम्मीद की जा सकती है, लेकिन धारासभाके कानून बनानेवाले सब मेम्बरोंसे यही अुम्मीद नहीं की जा सकती । अुनके सुभीतेका यह तकाजा है कि प्रान्तोंकी धारासभाओंमें प्रान्तीय भाषाओंमें ही कानून बनाये जायँ । लेकिन हर प्रान्त या सूबेको अपने कानूनोंका अनुवाद आम भाषामें भी छापना चाहिये; और अेकसे ज्यादा भाषा बोलनेवाले प्रान्तोंके लिअे या जो धारासभाके मेम्बर प्रान्तकी भाषाके बदले देशकी आम भाषामें बोलना पसन्द करें, अुनके लिअे अैसा करनेमें कोअी रुकावट नहीं होनी चाहिये ।

"हर हालतमें अनुवाद तो करने ही होंगे । अुनसे बचा नहीं जा सकता । या तो जनताकी जानकारीके लिअे या प्रान्तके बाहरके कामकाजके लिअे अनुवाद तो करने ही होंगे । अगर मूल काम प्रान्तकी भाषामें किया जाय, तो अिससे आम भाषाकी तरक्कीके साथ प्रान्तकी भाषाकी तरक्कीमें भी मदद मिलेगी ।"

मेरे खयालसे मैंने अपने पहले लेखमें यह बात काफी साफ कर दी है कि आम भाषाके अध्ययनको गहरा और तेज बनाना होगा । मैं अैसे समयका खयाल करता हूँ, जब हिन्दुस्तानका पढ़ा-लिखा होनेका दावा करनेवाला हर शख्स कमसे कम दो भाषायें जानेगा — देशकी आम भाषा और अपने हिस्सेकी भाषा । हिन्दुस्तान जैसे बड़े भारी देशमें अगर हमें किसी तरहकी अेकता बनाये रखना है या यों कहा जाय कि हमें देशको अैसी लगभग आज़ाद अिकाअियोंमें नहीं तोड़ना है — जिनकी हरअेककी भाषा दूसरी अिकाअियोंसे अलग हो — तो अिसका अेक यही हल हो सकता है । अिसलिअे सारे देशमें आम भाषाके अध्ययनको जोरोंसे बढ़ाना जरूरी होगा । सारे देशकी युनिवर्सिटियोंके लिअे आम भाषाको शिक्षाका माध्यम बनाना जरूरी न हो, तो भी अिसमें कोअी शक नहीं कि अुनके बहुतसे विद्यार्थियोंको देशकी आम भाषाको मेहनतसे सीखना होगा, अगर वे देशकी सेवा करनेकी और सारे देशमें होनेवाली समान हितकी बातोंसे सम्बन्ध रखनेकी आशा करते हैं । अगर वकील, जज और दूसरे कानूनी अफसर, धारासभाओंके मेम्बर और अूँचे दरजेके शिक्षक अच्छी तरह अपना फर्ज अदा करने लायक बनना चाहते हैं, तो अुन्हें आम भाषा अच्छी तरह जाननी ही होगी । जैसा कि मैंने कहा है, हम साअिंसी खोजके पत्र या रिसाले करीब अेक दर्जन भाषाओंमें नहीं निकाल सकते । अिसमें खर्च तो बढ़ेगा ही, साथ ही विदेशोंमें अुनके अुपयोगकी बात छोड़ दें, तो भी हमारे देशमें ही अुनका फायदा अगर खतम नहीं होगा तो बहुत कम जरूर हो जायगा । अगर वे आम भाषामें निकाले जायँ, तो कमसे कम देशके सारे खोज करनेवालोंको पढ़नेके लिअे मिल सकेंगे; और अगर अुनका दरजा अितना अूँचा हुआ कि वे देशके बाहरके पण्डितोंका भी आदर पा सकें, तो वे भी हिन्दुस्तानके खोजके पत्रोंको पढ़कर अपना ज्ञान ताजा रखनेके लिअे हमारी आम भाषा सीखेंगे । अिसलिअे मेरा यह विचार है कि देशमें ज्यों ज्यों आम भाषाकी पढ़ाअी बढ़ेगी और गहरी होती जायगी, त्यों त्यों वह कामके अैसे सारे क्षेत्रोंमें ज्यादा ज्यादा अिस्तेमाल की जायगी, जहाँ काम करनेवालोंको अेक नपे-तुले दायरेमें ही नहीं बल्कि सारे देशके लोगोंको अपील करना है । मैं नहीं जानता और आज नहीं कह सकता कि सारे हाअीकोर्टोंके लिअे कभी यह मुमकिन होगा कि वे अपने कामकाजके लिअे देशकी आम भाषाको मंजूर कर लें । अगर यह चीज मंजूर नहीं की गअी, तो अैसी हालतमें बेशक अुनके सारे महत्वके कानूनी फैसलोंका और अिसी तरहके संजोगोंमें अलग अलग प्रान्तोंकी धारासभाओं द्वारा पास किये जानेवाले सारे कानूनोंका भी देशके बाकी हिस्सोंके लिअे आम भाषामें अनुवाद करना होगा; और अिससे सम्बन्ध रखनेवाले हाकिमोंको अनुवादके सही होनेकी गारंटी देनी होगी । जब तक कमसे कम अितना नहीं किया जायगा, तब तक देशके अलग अलग हिस्सोंके लिअे दूसरे प्रान्तोंके कामकाजकी पूरी जानकारी रखना नामुमकिन होगा । मैं यह भी सोचता हूँ कि हर प्रान्तमें आम भाषाके कुछ अखबार होंगे, जो आजके अंग्रेजी अखबारोंकी तरह सारे देशमें पढ़े जायँगे ।

अगर हमें यह सब करना है, तो अिसके सिवा कोअी चारा नहीं है कि युनिवर्सिटियाँ और दूसरी शिक्षा-संस्थायें आम भाषामें अूँचे दरजेकी तालीम देने लायक बनें, ताकि युनिवर्सिटियोंके जो विद्यार्थी राजकाजकी अूँची जगहों पर पहुँचना चाहते हैं, सियासी जीवन बिताना चाहते हैं और साअिंस, टेकनिकल काम, अखबार-नवीसी वगैरामें अूँची योग्यता पाना चाहते हैं, वे आम भाषाके अूँचे पंडित बन सकें । अिसके लिअे हर प्रान्तमें हाअीस्कूलसे लेकर आगेकी अूँची शिक्षामें दूसरी भाषाके तौर आम भाषाकी पढ़ाअीको लाजमी बनाना होगा, और अुसकी पढ़ाअीको हर तरहसे बढ़ावा देना होगा ।

अिससे किसीको डरना नहीं चाहिये । मेरे खयालसे हिन्दुस्तानियोंमें भाषायें सीखनेकी खास योग्यता है और अेक बार अिस चीजको समझ लेनेके बाद वे आम भाषाके निपुण (होशियार) बननेमें ज्यादा वक्त नहीं लेंगे — भले अुनकी अपनी भाषा कुछ भी हो । अंग्रेजी पूरी तरह विदेशी भाषा है, फिर भी हिन्दुस्तानमें अुसके दाखिल होते ही विद्यार्थियोंकी पहली ही पीढ़ीने अुसमें अूँची योग्यता दिखाअी । तबसे आज तक हिन्दुस्तानियोंकी अंग्रेजीकी योग्यतामें कोअी बढ़ती नहीं हुअी है । अंग्रेजीका ज्ञान लम्बे दायरेमें फैला जरूर है, लेकिन वह गहरा नहीं हुआ है । अिसलिअे यह डर नहीं रखना चाहिये कि अगर आम भाषाकी ठीक ढंगसे पढ़ाअी शुरू की गअी, तो कोअी खास हिस्सा जिन्दगीकी दौड़में पीछे रह जायगा । लोगोंमें अैसा डर हो सकता है । पर यह डर अिस बारेमें किसी खास हिस्सेको मिलनेवाले नाजायज फायदेको खतम करनेका कोअी अुपाय निकाल कर आसानीसे दूर किया जा सकता है ।

२. संस्कृतका अुपयोग

श्री मशरूवालाका दूसरा मुद्दा यह है:

"आप हिन्दुस्तानकी राजभाषाके बारेमें जिन अुम्दा नतीजों पर पहुँचे हैं, अुनकी आठवीं कलमके बारेमें पेचीदा और बहसका मुद्दा यह नहीं है कि हमें संस्कृतसे बहुतसे शब्द लेने पड़ेंगे, बल्कि यह है कि किस तरहके शब्द संस्कृतसे लिये जायँगे और किस तरीकेसे वे लिये या गढ़े जायँगे । अिस बारेमें मैंने 'हरिजन' (ता० २८–११–'४८) में विधानके मसौदेके 'तीन अनुवादों' पर जो टीका की है, वह आपने जरूर देखी होगी । मैं मजबूतीसे यह महसूस करता हूँ कि नये गढ़े हुअे शब्द अैसे होने चाहियें, जिनका हमारी बोली जानेवाली भाषाओंके ढाँचे और स्वभावसे अच्छी तरह मेल बैठ सके और जो अपने अुच्चारणों (तलफ्फुज) और ध्वनियों (आवाजों) की सादगी और सरलताकी वजहसे सारे प्रान्तोंके मामूली पुरुषों, स्त्रियों और बच्चोंको

www.vinoba.in

पसन्द आ सकें। अुन्हें पण्डिताअीके दिखावे और बनावटीपनसे भरसक बचना ही चाहिये।"

मैंने अपने लेखके आठवें नतीजेमें यह सुझाया है कि अगर हमें नये शब्द गढ़ने हैं, तो हमें संस्कृतसे ही अुन्हें लेना होगा। मैं मंजूर करता हूँ कि अिस बारेमें पण्डिताअीके दिखावेसे बचना चाहिये और जहाँ तक मुमकिन हो, गढ़े हुअे शब्दोंका मेल बोली जानेवाली भाषाके साथ बैठना चाहिये और अपने सादेपनके कारण वे सबको पसन्द आने चाहियें। यह कहना मुश्किल है कि वह कहाँ तक संभव होगा, लेकिन अिसमें कोअी शक नहीं कि हमारी कोशिश अुसी तरफ होनी चाहिये।

वर्धा, १०-१२-'४८ राजेन्द्रप्रसाद

(अंग्रेजीसे)

अेक सही शिकायत

बम्बअीके 'मजदूर वीकली' के अेडिटर साहब लिखते हैं:

"मैं 'हरिजनसेवक' खुद भी पढ़ता हूँ और चाहता हूँ कि अखबारमें अुसका कुछ अिक़्तबास (नक़ल) भी दे दिया करूँ। लेकिन दिक्कत यह होती है कि 'हरिजनसेवक' अुर्दू रस्म-अुल-खत (लिपि) में तो ज़रूर होता है, लेकिन अिसमें संस्कृत और हिन्दीके अैसे मुश्किल अलफ़ाज़ ठूँसे जाते हैं कि न मैं अुसको ठीक तरहसे समझ सकता हूँ, और न मेरे लिअे यह मुमकिन होता है कि अखबारमें अुसके कुछ हिस्से नक़ल करा सकूँ।...

"हिन्दके आज़ाद होनेके बाद आल अिण्डिया रेडियो और आपके परचेकी जबान बदल गअी। मालूम नहीं रेडियो और अखबारका मकसद हिन्दी पढ़ाना हो गया है? जहाँ तक मेरी मालूमात (माहिती) का ताल्लुक (सम्बन्ध) है, रेडियो दुनियाके हालातसे बाखबर रखने या दिलचस्पीके लिअे और अखबार या रिसाला खबरें और खयालात लोगों तक पहुँचानेका काम करता है। मगर हो क्या गया है कि जो हिन्दी रेडियो पर बोली जाती है, अेक आम आदमीमें अितनी सलाहियत (योग्यता) नहीं कि अुसे समझ सके। नतीजा यह है कि लोगोंको रेडियोकी खबरोंसे दिलचस्पी ही नहीं रही है। अिस तरह 'हरिजनसेवक' अुर्दू खरीद कर जब लोग अुसको समझ न सकेंगे, तो फिर अुसके खरीदने या पढ़नेसे अुन्हें क्या फायदा पहुँचेगा? या अगर हिन्दी पढ़ाना परचेका मकसद है, तो गुजराती, मराठी और अंग्रेजी जबानके अखबारोंमें भी हिन्दी ठूँसिये। सिर्फ अुर्दूदाँ (अुर्दू जाननेवाली) पब्लिक (जनता) ने क्या कसूर किया है कि वह 'हरिजनसेवक' से फायदा न अुठा सके?

"अुम्मीद है कि आप अिन अलफ़ाज (शब्दों) पर गौर करेंगे और अगर कुछ भी नहीं कर सकें तो कमसे कम अितना तो जरूर करें कि **मुश्किल हिन्दीके अलफ़ाज़के सामने पहलेकी तरह अुर्दूके अलफ़ाज़ ब्रेकेटमें लिख दें**। ताकि लोग हिन्दी भी सीख सकें और मतलबसे भी फायदा अुठा सकें। कम्यूनिस्ट पार्टीके अखबार पाँच जबानोंमें शाया होते हैं। हर जबानके पढ़नेवाले अुनको समझ सकते हैं। लेकिन 'हरिजनसेवक' को मराठी, गुजराती, अंग्रेजी वगैरा पढ़नेवाले समझ सकते हैं। सिर्फ अुर्दू पढ़नेवाले अिससे फायदा नहीं अुठा सकते।"

मैं कबूल करता हूँ कि अिस शिकायतमें बहुत कुछ सचाअी है। 'हरिजनसेवक' की भाषा या जबान जिनका ताल्लुक अरबी-फारसीके लफ्जों और मुहावरोंवाली बोलीसे ज्यादा रहा है, अैसे मुसलमान, पारसी, पंजाबी, सिंधी वगैराके वास्ते ही नहीं, लेकिन हिन्दुस्तानी बोलनेवाली आम जनताके लिअे भी समझनेमें मुश्किल होती है, यह मैं खुद महसूस कर रहा हूँ। और कुछ पढ़नेवालोंने मुझे कहा भी है। अिसमें मेरी मुश्किल यह रही है कि मैं और मेरे साथ काम करनेवाले लोग सही गैर-संस्कृत शब्द बाज दफा जानते ही नहीं हैं; और अैसे कोअी साथी अब तक नहीं मिल रहे हैं, जो आम जनताकी बोलीके अच्छे जानकार हों। 'हरिजनसेवक' में हिन्दुस्तानीका अच्छेसे अच्छा नमूना पेश किया जाना चाहिये, यह मंजूर करते हुअे भी अुस पर मैं अभी तक अमल नहीं कर सकता, अिसका मुझे खेद है। लेकिन मेरी कोशिश अुसी तरफ है।

रेडियोके बारेमें भी मैंने यह शिकायत सुनी है। मुझे पता नहीं यह शिकायत कहाँ तक सही है। क्योंकि मुझे रेडियो सुननेका मौका बहुत कम मिलता है। मुझे यह भी पता नहीं कि वहाँ भाषाके बारेमें कौनसी नीति तय हुअी है। मैं जब स्वीकार करता हूँ कि 'हरिजनसेवक' की भाषा अैसी होनी चाहिये, जिसे साधारण पढ़-लिखे लोग भी आसानीसे समझ सकें, तो यह कहनेमें मुझे कोअी हिचकिचाहट नहीं हो सकती कि रेडियोकी जबान तो 'हरिजनसेवक' से भी आसान होनी चाहिये। क्योंकि अुसके सुननेवाले तो अनपढ़ लोग भी होते हैं। रेडियो पर आदमी बोलता है, तो वह सुननेवालेके लिअे बोलता है, महज अपनी जबानकी पंडिताअी दिखानेके लिअे नहीं। तब अगर अुसकी भाषा सुननेवाले समझ न सकें, तो चीनका रेडियो सुनना या दिल्लीका, दोनों बराबर हो जाते हैं। मैं अुम्मीद करता हूँ कि रेडियोके अधिकारी अिस शिकायतकी जाँच करेंगे।

मैं मुश्किल हिन्दी लफ्जोंके अुर्दू बोल ब्रेकेटमें बतानेकी कोशिश करता रहूँगा।

साथ ही अुर्दू लिखनेवालोंसे अेक अर्ज करता हूँ कि अुन्हें भी चाहिये कि वे मुश्किल अुर्दू शब्दोंको और गैर-हिन्दुस्तानी व्याकरणको छोड़ें: जैसे कि अिक़्तबास, रस्म-अुल-खत, अलफ़ाज, मालूमात, सलाहियत, हालात।

बम्बअी, १५-१२-'४८ किशोरलाल मशरूवाला

मध्यप्रान्त और बरारमें ग्राम-सुधार

मध्यप्रान्त और बरारकी सरकार कुछ ग्राम सुधार केन्द्र खोलनेका विचार कर रही है। ये केन्द्र खोलना तय करनेके पहले यह जान लेना जरूरी है कि सम्बन्धित गाँववालोंकी अिच्छा अिसके लिअे है या नहीं। गाँववालोंका निश्चित रुख जाननेके लिअे ग्रामसुधार-मंत्री श्री अे० अेम० माकडे, अन्नमंत्री श्री आर० के० पाटिल, ब्यौहार राजेन्द्रसिंहजी और श्री जे० सी० कुमारप्पाकी अेक ग्रामसुधार बोर्डकी कमेटी बनाअी गयी। अिस कमेटीने ५ नवम्बरसे १० नवम्बर तक दौरा किया। अुन्होंने अपने दौरेके चार केन्द्र कायम किये थे। अिन केन्द्रों पर आसपासके १०-१५ गाँवोंके लोग जमा हुअे थे। कमेटीने अिन लोगोंको अपनी योजनाका अुद्देश्य समझाया। अुन्हें यह भी समझाया कि आप लोगोंको अपने व्यक्तिगत स्वार्थोंको गौण बनाकर सर्व सामान्य हितोंमें किस तरह सहयोग देना होगा और कैसे अेक योजनाके मुताबिक काश्त करनी होगी, जो अेक चुने हुअे हिस्सेके लोगोंको समतोल भोजन देनेके मकसदसे बनाअी गयी है। साथ ही अुन्हें यह भी कहा कि अिस योजनाको अमलमें लाने पर आप सब लोगोंको अपने सारे व्यवहार अेक अच्छी तरह संचालित बहुविध सहकारी समितिके जरिये चलाने होंगे।

सैकड़ोंकी तादादमें जमा हुअे अुन देहातियोंने अिन बातोंमें जो भी खूब रस लिया और अुस योजनाको अमलमें लाना भी मंजूर किया, फिर भी कमेटीने अुन्हें सलाह दी कि वे अपने साथी-संगी, बड़े-बूढ़े सबसे अिस सम्बन्धमें सलाह मशविरा करें और बादमें अपने फैसलेकी अुन्हें सूचना करें। अिस सलाह मशविरेके कामको चलानेके लिअे सम्बन्धित गाँवोंके प्रतिनिधियोंकी स्थानीय प्रादेशिक कमेटियाँ बनाअी गयीं।

(अंग्रेजीसे) जे० सी० कुमारप्पा

www.vinoba.in

हरिजनसेवक
२६ दिसम्बर १९४८

सर्वोदय प्रदर्शनी

[ता० १४-१२-'४८ को सर्वोदय प्रदर्शनी (गांधीनगर, जयपुर) खोलते समय दिया हुआ विनोबाजीका भाषण । — द० दा०]

'सर्वोदय प्रदर्शनी खोलनेका काम आप मुझसे करवाना चाहते हैं। आपका यह काम मैं खुशीसे कर देता हूँ ।

हिन्दुस्तानके समुद्रमें यह प्रदर्शनी अेक बूँद भर है । लेकिन वह अमृतकी बूँद है और गाँवकी जनताके लिअे जीवन देनेवाली है । मेरे लिअे तो कांग्रेसमें यही अेक आशा है । जिसके पीछे कअी कार्यकर्ताओंकी मेहनत रही है । हिन्दुस्तानके हर हिस्सेसे रचनात्मक काम करनेवाली बहुतसी संस्थाओंके करीब पाँच सौ भाअियोंने आकर यहाँ काम किया है और अपनी समझ और भक्ति लगाकर जिस प्रदर्शनीको रचा है ।

छह महीने पहलेका जिक्र है । वर्धामें अेक सभा हुअी थी, जिसमें वहाँकी सब संस्थाओंके लोग अिकट्ठे हुअे थे । वहाँ चर्चा निकली कि देहातका काम जिन संस्थाओं द्वारा तो हम चलाते हैं, लेकिन साथ साथ देहातमें घूमनेका सिलसिला भी जारी रखना चाहिये । हममेंसे कुछ लोगोंको अुसमें लग जाना चाहिये । लेकिन अभी तक वह नहीं बन सका । क्योंकि सारे लोग अपने अपने काममें अैसे गिरफ्तार थे कि अुससे छूट नहीं पाये । लेकिन वे ही लोग काफी तादादमें यहाँ आकर काम कर रहे हैं । वर्धासे ही करीब सौ लोग आये हैं । वहाँके कामसे अपनेको मुश्किलसे छुड़ाकर ही वे यहाँ आये हैं । जिस परसे आप समझ सकते हैं कि अुन्होंने जिस कामको कितना महत्त्व दिया है । मैं अुम्मीद करूँगा कि प्रेक्षकगण (देखनेवाले) अुनकी मेहनतको सफल करेंगे । वे बारीकीसे जिस प्रदर्शनी (नुमाअिश) का अध्ययन करेंगे और अपने जीवनमें अुसका अुपयोग करेंगे ।

लेकिन यहाँ कोअी टीका करनेवाला पूछ सकता है कि 'अुम्मीद रखना अेक बात है और अुचित विचारके साथ अपेक्षा रखना दूसरी बात है । दो चार रोजमें लाखों लोग जहाँ आयेंगे और जहाँ अुनकी नजरोंसे बहुतसी चीजें सिर्फ गुजरेंगी, वहाँ अध्ययनकी आशा कोअी कैसे कर सकता है ?' मैं मानता हूँ कि अिस टीकामें वजूद है, हालाँ कि लाखोंकी नजरोंसे चीजोंका गुजरना भी अेक कामकी बात है । फिर भी मेहनतके हिसाबमें फल कम होगा, यह तो मानना ही पड़ेगा । लेकिन प्रदर्शनीमें काम करनेवालोंने अपना फर्ज समझ कर बड़े अुत्साहसे काम किया है । मैं तो गणिती (हिसाब लगानेवाला) ठहरा । अिसलिअे शक्तिके संचयके खयालसे मैंने आज तक अैसी नुमाअिशोंमें बहुत हिस्सा नहीं लिया है । अिस मरतबा आग्रहके कारण चला आया हूँ । लेकिन अेक दूसरी चीज भी है, जो मुझे यहाँ खींच लाअी है । वह है आपका रखा हुआ अिस प्रदर्शनीका 'सर्वोदय' नाम । आप जानते हैं कि गांधीजीके निर्वाणके बाद सर्वोदय समाजका विचार लोगोंमें फैल गया है। जहाँ जाता हूँ, लोग मुझसे पूछते हैं कि यह सर्वोदय समाज क्या है? अिसका संगठन कैसा है? मैं अुनको समझाता हूँ कि वह सिर्फ संगठन नहीं है । वह तो अेक बड़ा क्रांतिकारी शब्द है । बड़े शब्दोंमें जो ताकत भरी रहती है, वह किसी संगठनमें नहीं रहती । शब्द तारनेवाले होते हैं, और शब्द मारनेवाले भी होते हैं । शब्दोंसे अुत्थान होता है, और शब्दोंसे पतन होता है । अैसे अेक बड़े शब्दका हमने अुपयोग किया है । वह शब्द क्या कहता है? हमें चन्द लोगोंका अुदय (तरक्की) नहीं करना है, ज्यादा लोगोंका अुदय हमें नहीं करना है, ज्यादासे ज्यादा लोगोंके अुदयसे भी हमें सन्तोष नहीं है । हमें तो सबके अुदयसे ही सन्तोष होगा । छोटे-बड़े, कमजोर-ताकतवर, बुद्धिमान और जड़ सबका अुदय होगा, तभी हमें चैन लेना है । यही विशाल भावना हमें यह शब्द देता है ।

अिस निगाहसे अिस प्रदर्शनीको देखेंगे, तो हमें बहुतसी चीजें सीखनेको मिलेंगी । यहाँ खादी-विभागमें अैसे छोटे छोटे औजार हैं, जिनसे कपाससे लेकर कपड़ा बुनने तकका काम किया जा सकता है । ताँतको भी काममें लेनेकी अिसमें जरूरत नहीं पड़ेगी । नअी तालीमका विभाग देखनेसे पता चलेगा कि बच्चे बेकार नहीं बल्कि देशके समर्थ सेवक बनते हैं । यहाँ कअी ग्रामोद्योग देखनेको मिलेंगे, जो हर देहातमें आसानीसे किये जा सकते हैं । यहाँ देहातके लिअे अुपयोगी पाखानोंके कअी नमूने रखे गये हैं, जिनसे गाँवकी तन्दुरुस्तीके बचावके साथ गाँववालोंकी संस्कारिता (तहजीब) बढ़ेगी और देशकी पैदावार भी ।

लोग पूछते हैं: 'यह तो बड़े पैमाने पर काम करनेका जमाना है । अिसमें आपके छोटे औजार क्या काम देंगे ?' मैं कहता हूँ मुझे बड़ा नहीं, ज्यादा बड़ा नहीं, सबसे बड़ा पैमाना चाहिये । लेकिन बड़ा पैमाना किसे कहें, यह सोचनेकी बात है । मैं तो कहता हूँ कि अिन छोटे औजारोंसे ही सबसे बड़े पैमाने पर काम होता है । क्योंकि अुनमें करोड़ोंके हाथ लग सकते हैं । मिलोंमें बहुत हुआ तो दस बीस लाख हाथोंसे काम होगा, और अुतने ही लोगोंको खाना मिलेगा । लेकिन जिन औजारोंमें करोड़ोंके हाथ लग सकते हैं और जिनसे करोड़ोंको रोजी मिलती है, अुस कामको छोटे पैमानेका कहेंगे या बड़े पैमानेका ? जैसे तुकारामने कहा कि 'मेरा धन और धान्य अितना थोड़ा नहीं है कि किसी बक्समें या कोठारमें समा सके । अिसलिअे वह हर घरमें रखा हुआ है । अितना बड़ा वैभव (दौलत) मेरा है ।' अपने छोटेसे ब्रैंक या ट्रंकमें भरे हुअे धनको जो बड़ा मानता है, अुसका दिल छोटा है । जिसका धन हर घरमें भरा है, वह विचारमें बड़ा है और दौलतमें दौलतमन्द है । बारिशकी बूँदका मुकाबला हौजमें भरे पानीसे करके जो बूँदको छोटी मानता है, वह ठीक ढंगसे विचार करना नहीं जानता । बारिशकी बूँद छोटी होती है, पर हर जगह गिर कर खूब पानी देती है । अिसलिअे वह छोटी नहीं है । यही ग्रामोद्योगोंकी क्रान्तिकारी दृष्टि अिसमें है, जो बहुत बड़े पैमाने पर काम करना सिखाती है ।

लेकिन कुछ लोग कहते हैं कि 'आप कांग्रेसका आश्रय (आसरा) क्यों लेते हैं ? आपके ग्रामोद्योगों और सर्वोदय (सबकी तरक्की) को कांग्रेसमें कौन पूछता है ?' मैं कहता हूँ कि कांग्रेसकी अिस बारेमें अभी क्या राय है, यह तो मैं नहीं जानता । शायद कांग्रेसके विचारकी सफाअी अिस अधिवेशन (जलसे) में हो जाय, तो हमें मालूम हो जायगा । लेकिन मैं अितना तो जरूर कहूँगा कि अगर हम कांग्रेसके आश्रित बनकर, कांग्रेसके भरोसे पर, यहाँ आये हैं तो खतरेमें हैं । यह तो मैं देख ही रहा हूँ कि कांग्रेसवालोंने अपनी पैदा की हुअी कमाअीको क्षीण करने (घटाने) का कार्यक्रम बड़ी तेजीसे शुरू कर दिया है । नअी तपस्या करनेका तो वे नहीं सोचते हैं । पुरानी तपस्याको बेचकर खाना चाहते हैं । भोगकी लालसा, अैशआरामकी अिच्छा अुनमें बढ़ रही है । मत्सर बुद्धि (दूसरोंसे जलनेकी भावना) का जोर है और सत्यका कोअी खयाल नहीं किया जाता । मैं किसीको दोष देनेकी निगाहसे नहीं बोल रहा हूँ । मैं अपनेको कांग्रेसका अेक अदना सेवक मानता हूँ । मैंने अपनी जगह तो कांग्रेसमें कहीं नहीं रखी है । लेकिन जब कभी कांग्रेसने मेरी सेवा लेनी चाही, मैंने दी है । अिसलिअे मैं दुःखके साथ यह बात कह रहा हूँ । हम लोग यहाँ आये हैं, तो हममें यह हिम्मत होनी चाहिये कि कांग्रेस पर भी हम अपना रंग चढ़ायेंगे । वैसे तो सारे देशको हमें आत्मसात् (अपने जैसा) करना है । कांग्रेसमें ही नहीं, और भी जहाँ कहीं हमें प्रवेश

www.vinoba.in

मिले, वहाँ हमें जाना चाहिये । और अपने विचार और आचार लोगोंके सामने रखने चाहियें । लोगोंको लेना होगा, अुतना वे ले लेंगे । नारद जैसे देवोंमें पहुँचता था, दानवोंमें जाता था और अिन्सानोंमें घूमता था, वैसे हर जमातमें और हर जगह, जहाँ हमें मौका मिले, जानेकी हम हिम्मत रखेंगे तो अुसमें हमारा भला है और देशका भी । हम किसी संस्थाके सहारे नहीं रहना चाहते । वैसे ही न सत्ता या हुकूमतकी तरफ हमें देखना है । किसी भी क्रान्तिकारी विचारका फैलाव सत्ताके जरिये नहीं हुआ है । सत्ता बहुत हुआ तो लोगोंको थोड़ा सुख पहुँचा सकती है । अिससे ज्यादा आशा हमें सत्तासे नहीं करनी चाहिये । हमारे देशमें बुद्ध भगवानने क्रान्तिकारी विचार लोगोंको दिये थे । लेकिन अुसमें अुन्हें राजसत्ताका अुपयोग नहीं, बल्कि त्याग करना पड़ा था । गांधीजीने भी विचारोंके प्रचारके लिअे राज नहीं चाहा था । अुन्होंने तो स्वराज चाहा था । स्वराज यानी जहाँ हरअेक अपना राजा बन जाता है । यानी जहाँ राजसत्ता क्षीण या कम हो जाती है । सत्ताके लिअे कोअी मौका ही नहीं रह जाता । वह स्वराज तो हमें हासिल करना बाकी है । अिसलिअे सत्तासे निरपेक्ष (अलग) रह कर और आत्मनिष्ठ बन कर हमें काम करना सीखना चाहिये ।

मैं तो अिस प्रदर्शनीका अेक दूसरी ही निगाहसे लाभ देखता हूँ । यहाँ करीब ५ सौ कार्यकर्ता महीनोंसे काम कर रहे हैं । अुनको यहाँ अेक साथ काम करनेका मौका मिला है । वे अपनी अपनी संस्थाओंमें अलग अलग प्रकारका काम किया करते थे । अुनको यहाँ समग्र दृष्टिसे काम करनेकी तालीम मिली है । आपसी मेलजोलसे काम करनेका पाठ मिला है । अिसके फलस्वरूप अगर वे प्रेमको बढ़ायेंगे, अहिंसा और सत्यकी निष्ठा बढ़ायेंगे, तेजवाले, बुद्धिमान और आत्मनिष्ठ बनेंगे, तो मैं मानूँगा कि अिस प्रदर्शनीका ज्यादासे ज्यादा लाभ हुआ ।

देखनेवाले प्रदर्शनीमें रखी हुअी चीजोंको और बतायी जानेवाली क्रियाओंको ध्यानसे देखेंगे, अैसी आशा रखते हुअे मैं यह प्रदर्शनी खुली जाहिर करता हूँ ।

चौथा तरजुमा

ता० २८–११–'४८ के 'हरिजनसेवक' में मैंने विधानके तीन अनुवादोंका जिक्र किया है । श्री राजेन्द्रबाबूसे मालूम हुआ कि श्री राहुल सांकृत्यायनजीका किया हुआ अेक चौथा तरजुमा भी छपा है । विधानके जिन हिस्सोंके जुदा जुदा तीन अनुवाद मैंने मिसालके तौरपर दिये हैं, अुनका श्री सांकृत्यायनजीका तरजुमा श्री राजेन्द्रबाबूने भेज दिया है । वह नीचे देता हूँ :

१४. १ अपराध दंड विषयक रक्षा

कोअी व्यक्ति किसी अपराध के लिये तब तक दंडित नहीं किया जायगा, जब तक कि वह किसी अैसे विधान का अुल्लंघन न करे, जो कि आरोपित अपराध के करने के समय प्रचलित रहा हो और न वह अुससे अधिक दंड का भागी होगा जितना कि अपराध करने के समय प्रचलित विधान के अनुसार दिया जा सकता है ।

२. कोअी व्यक्ति अुसी अपराध के लिये अेक से अधिक बार दंडित नहीं किया जायगा ।

३. किसी अपराध में अभियुक्त कोअी व्यक्ति स्वयं अपने विरुद्ध गवाही देने के लिअे विवश नहीं किया जायगा ।

१७. मनुष्य के क्रय विक्रय और बेगार बलात् काम लेने का प्रतिषेध

१८. चौदह वर्ष से कम आयुवाले किसी भी बच्चे से किसी भी कारखाने या खान में काम नहीं लिया जायगा और न अुन्हें किसी जोखिम के काम में लगाया जायगा ।

२४. सम्पत्ति प्राप्ति का निराबाध अधिकार

१. कोअी व्यक्ति विधान के अधिकार के बिना अपनी सम्पत्ति से वंचित नहीं किया जायगा ।

५७. किसी योगायोग में राष्ट्रपति के कार्यसम्पादन के लिअे बन्धान बनाने का अधिकार

अिस अध्याय में बन्धान न किये किसी योगायोग में राष्ट्रपति के कृत्य के सम्पादन के लिअे पार्लमेण्ट जैसा अुचित समझे वैसा बन्धान बना सकेगी ।

पाठक खुद सोचें कि यह तरजुमा कहाँ तक ठीक है । बरसोंसे जिन शब्दोंको हम अेक मानेमें बरतते आये हैं, अुन्हें दूसरे मानोंमें अिस्तेमाल करनेसे गोलमाल होना संभव है । यहाँ 'विधान' शब्दको अिस तरह बदला गया है । मेरी रायमें हमें नये शब्द बनानेकी मेहनत तभी करनी चाहिये, जब या तो चालू लफ्ज गलतीसे चल पड़ा हो (जैसे कि मुलतवी या तहकूबीके मानीमें 'स्थगित' शब्द — जिसका ठीक अर्थ होता है 'छिपाया हुआ'), अथवा जब वह अेक अैसी नयी चीज या अनुभव या क्रियाका नाम हो, जिसे ठीक बतानेके लिअे हमारी प्रचलित भाषाओंमें कोअी मुकर्रर शब्द नहीं । Emergency शब्दका मतलब देशी भाषाओंमें आज बरसोंसे हम बताते आये हैं । 'जोखिमकी हालत', 'भयका प्रसंग', 'संकटका समय', 'कटोकटीका मामला', 'आपत्काल' वगैरा भाषाके प्रयोगोंसे हम अुस परिस्थिति (हालत) को ठीक ठीक समझ लेते हैं । 'योगायोग' कहनेसे वह मौका खयालमें नहीं आता । जहाँ तक मैं जानता हूँ, जिन प्रान्तोंमें अुसका अुपयोग होता है, वहाँ भी अुसके मानी होते हैं — 'अकस्मात्', 'अचानक', 'सुदैव या दुर्दैवसे', 'खुदा (भगवान) का करना' वगैरा । मैं समझ नहीं सकता कि हमारे दिलमें कृत्रिम और आडम्बरी भाषा-शैली (अिबारत) का क्यों अितना शौक है? ये कोशिशें सफल नहीं होंगी । जनतामें अेक अैसी अच्छी कहो या बुरी ताकत है, जो बड़े शब्दोंको या तो बिगाड़ देती है, छोटे कर देती है या गलत मानोंमें बरतने लग जाती है । 'सिनेमॅटोग्राफ' का 'सिनेमा' या 'टॉकी', 'कोआअिन', 'टॅन्जन्ट' आदिका 'कौस', 'टैन' आदि, 'वाअिसिकल' का 'बाअिक' आदि कर देती है । अथवा 'सीमंत' का 'श्रीमन्त', 'अिच्छा' का 'अिक्षा', 'वैराग्य' का 'वैराज्ञ', और 'यज्ञ' का 'यग्य' कर देती है । वैसे 'योगायोग' का अुत्तर, पूर्व और मध्य हिन्दुस्तानमें 'जोगाजोग' तो होगा ही, लेकिन 'योग्यायोग्य' और 'योज्ञायोज्ञ' भी हो जाना मुमकिन है ।

'बन्धान' शब्द गुजरातीमें आदत, व्यसनके लिअे मशहूर है । जैसे अफीमका बन्धान । गुजरातीमें 'विधान' के लिअे जो शब्द है, वह 'बन्धान' नहीं लेकिन 'बन्धारण' है ।

क्या भाषामें, क्या वेश और रहन-सहनमें हम जितने सादे, अकृत्रिम, और आडम्बरसे दूर रहनेवाले बनेंगे, अुतने ही जनताके जीवनके साथ ज्यादा अेकरूप हो सकेंगे ।

बम्बअी, १६–१२–'४८ **किशोरलाल मशरूवाला**

महादेवभाअीकी डायरी
[पहला भाग]
संपादक : नरहरि परीख; अनु० रामनारायण चौधरी
कीमत ५–०–० डाकखर्च ०–१२–०

सयानी कन्यासे
लेखक : नरहरि परीख; अनु० काशिनाथ त्रिवेदी
कीमत १–०–० डाकखर्च ०–२–०
नवजीवन कार्यालय, अहमदाबाद

www.vinoba.in

सर्वोदय प्रदर्शनी

[श्री विनोबाको सर्वोदय प्रदर्शनी खोलनेके लिअे प्रार्थना करते हुअे प्रदर्शन-समितिके प्रेसिडेण्ट श्री श्रीकृष्णदास जाजूने जो भाषण दिया, अुसका सार नीचे दिया जाता है।]

कांग्रेसने सन् १९३४ में अेक प्रस्ताव पास करके कांग्रेसके सालाना अधिवेशनों (जलसों) के साथ होनेवाली प्रदर्शनियों और प्रत्यक्ष (आंखोंके सामने करके) बतलानेकी प्रक्रियाओंके संगठनका काम अखिल भारत चरखा संघ और अखिल भारत ग्रामोद्योग संघको सौंपा और आदेश (अैलान) किया कि "ये संस्थायें अिनका संगठन अिस तरह करें कि अुससे आम जनताके, खासकर देहातियोंके, दिल बहलावके साथ साथ अुन्हें शिक्षा (तालीम) भी मिले। अिसमें खास मकसद यह रहे कि अिन दो संस्थाओंके कामोंका प्रदर्शन और प्रचार हो और सामान्यतः (आम तौरपर) गाँवके जीवनकी छिपी शक्ति जाहिर हो।"

अिस प्रस्तावमें हिन्दुस्तानी तालीमी संघ और गोसेवा संघका जिक्र नहीं है, क्योंकि ये अुस समय बने नहीं थे। पर ये संस्थायें भी वही काम करती हैं, जो अिस प्रस्तावका मकसद है। कांग्रेस अधिवेशनोंके साथ होनेवाली पिछली कुछ प्रदर्शनियों (नुमाअिशों) में तालीमी संघका काम शामिल रहा है। अिन दिनों गोसेवा संघका काम बढ़ा है। अब वह भी अिस प्रदर्शनीमें शामिल है।

अब तक अिन प्रदर्शनियोंका नाम खादी और ग्रामोद्योग प्रदर्शनी रहा। अुनमें खादी और ग्रामोद्योगके अलावा नअी तालीम वगैरा गाँवोंकी तरक्कीके दूसरे विषय भी रहते थे। गांधीजीके निर्वाणके बाद सेवाग्राममें रचनात्मक (तामीरी) कार्यकर्ताओंका अेक सम्मेलन हुआ। अुसमें सारे रचनात्मक कामोंको जोरोंसे चलाना तय हुआ और सर्वोदय समाजके नामसे अेक सीधा सादा संगठन बना। सर्वोदय (सबकी तरक्की) शब्दको हम बरसोंसे जानते हैं। रचनात्मक कामके विकास क्रमको खयालमें रखकर प्रदर्शन-समितिने महसूस किया कि अब अैसी प्रदर्शनियोंके कामका क्षेत्र समग्र (सब तरहकी) दृष्टि और सबकी भलाअीके खयालसे बढ़ाया जाय और अुनका नाम ठीक अर्थ बतानेवाला 'सर्वोदय प्रदर्शनी' रखा जाय।

कांग्रेसके साथ होनेवाली प्रदर्शनियोंका रूप समय समय पर बदलता रहा है। गांधीजीने प्रदर्शनीके रूपके बारेमें अेक लेख लिखा था। अुनके सिद्धान्त रूप वाक्य ये हैं:

> "अगर हम यह चाहते और मानते हैं कि देहातोंको सिर्फ जीना ही नहीं बल्कि मजबूत और खुशहाल बनना है, तो देहाती दृष्टि ही हिन्दुस्तानमें सही हो सकती है। अगर यह सच है तो हमारी प्रदर्शनीमें शहरी चीजोंको, दिखावेको और जाहो-जलालको स्थान नहीं हो सकता। प्रदर्शनी किसी हालतमें न तो तमाशा बननी चाहिये, न पैसा पैदा करनेका साधन। व्यापारियोंके विज्ञापनके लिअे तो कमी नहीं। वहाँ बिक्रीका काम नहीं होना चाहिये। प्रदर्शनी शिक्षा पानेकी जगह बननी चाहिये, दिलचस्प होनी चाहिये। देहातियोंके लिअे वह अैसी होनी चाहिये कि वे घर लौटकर कुछ न कुछ अुद्योग सीखनेकी जरूरत समझने लगें। प्रदर्शनी हिन्दुस्तानके देहातोंकी बुराअियों और अुन्हें दूर करनेके अुपाय बतानेवाली होनी चाहिये। साथ ही अुसे यह भी बताना चाहिये कि गाँवोंको आगे ले जानेका काम जबसे शुरू हुआ, तबसे आज तक क्या तरक्की हुअी।"

हमारी प्रदर्शन-समितिने अिस प्रदर्शनीका आयोजन (बन्दोबस्त) अिन अुसूलोंके मुताबिक करनेकी कोशिश की है। हमें अिसका भान है कि हम अुसमें पूरे नहीं अुतर सके हैं। बदकिस्मतीकी बात है कि आज हम गांधीजीके प्रत्यक्ष मार्गदर्शन (रहनुमाअी) से फायदा नहीं अुठा सकते। हमारी शक्ति और ज्ञान भी कम है।

अिस प्रदर्शनीके संगठनमें देहातके भलेका ही सबसे पहला ध्यान रखा गया है। देहात और शहरोंके खयालोंमें फर्क जरूर है। पर अुनके फर्कोंकी लकीर कहाँ है, यह फैसला करना आसान नहीं है। फिर प्रदर्शनीसे व्यापारियोंका सीधा या टेढ़ा सम्बन्ध आ ही जाता है। अुनके अपने स्वार्थ अलग ही होते हैं। अिसी तरह कलाके बारेमें भी काफी मतभेद हैं। कअी दोस्त, जो प्रदर्शनीमें हिस्सा लेना चाहते थे, अुन्हें हमें ना कहना पड़ा। शायद अुसमें हमारी गलती भी हुअी हो। समितिने जिस बातमें देहातका भला समझा, अुसके मुताबिक ही फैसला किया। कांग्रेसकी स्वागत-समितिसे प्रदर्शनीका गहरा सम्बन्ध रहता है। सब खर्चेका बोझ अुसी पर पड़ता है। हर्ष (खुशी) की बात है कि स्वागत-समितिने हमारी प्रदर्शनीको पूरा सहयोग दिया, जिसकी वजहसे अुसूलके मुताबिक यह प्रदर्शनी बनानेमें काफी मदद मिली।

आम तौर पर प्रदर्शनीके साथ चीजोंकी बिक्रीकी बात आ ही जाती है। पर अिस बार हमने प्रदर्शनीकी हदमें बिक्रीको जगह नहीं दी। प्रदर्शनीके बाहर पड़ोसमें ग्रामोद्योग बाजार रखा गया है, जिसमें ग्रामोद्योगसे बनी चीजें बिक्रीके लिअे रखी गअी हैं। अिसके लिअे टिकिट भी नहीं है। प्रदर्शनियोंके अितिहास (तवारीख) में यह अेक नअी बात है। ग्रामोद्योगमें बड़ी बात स्वावलम्बन या अपनी जरूरतें खुद पूरी कर लेना है। हमें यह आर्थिक व्यवस्था देहाती जनताको जँचानी है कि देहातमें बनी हुअी जरूरी चीजोंका अिस्तेमाल वहीं होनेके बाद बचा हुआ माल बाहर भेजा जाय। अिसलिअे बिक्रीको गौण (दूसरी) जगह देना जरूरी है। अिसके अलावा, प्रदर्शनी देखनेवालोंका ध्यान बिक्रीमें न बँटकर वहाँ दिखलाअी जानेवाली प्रक्रियाओंमें लगा रहे और अुन्हें अेकाग्र (अेक ही तरफ लगे हुअे) मनसे पूरी शिक्षा लेनेका मौका मिले, अिस खयालसे खास प्रदर्शनीकी जगहसे बिक्रीको हटा दिया गया है। अिस प्रदर्शनीमें मुनाफेकी दृष्टि बिलकुल नहीं रखी गअी है। स्वागत-समितिको काफी नुकसान अुठाना पड़ेगा, अैसा दिखाअी देता है।

प्रदर्शनीका काम करनेमें लगभग सभी अखिल भारत चरखा संघोंने मदद दी है। कुछ दूसरी संस्थाओंकी मदद भी मिली है। अिनके कार्यकर्ता लम्बे अरसे तक यहाँ रहकर काम करते रहे हैं। अब कार्यकर्ताओं, स्वयंसेवकों और प्रक्रियाअें करनेवाले स्त्री-पुरुषोंकी कुल तादाद १००० तक पहुँच गअी है। रचनात्मक काममें लगे हुअे अितने कार्यकर्ताओंको अेक साथ देखकर यह कोशिश की गअी है कि यहाँ भी हमारा रोजका जीवन प्रार्थना, खानपान, बरताव, सफाअी वगैरामें प्रदर्शनीके अुसूलोंके मुताबिक ही रहे। पोशाकमें खादी पर जोर दिया गया है और दूध-घीमें गायके दूध-घी पर। प्रदर्शनीकी व्यवस्था, बनावट और सजावटमें बनते कोशिश ज्यादासे ज्यादा देहाती और ग्रामोद्योगकी चीजोंका अिस्तेमाल करनेकी कोशिश की गअी है। देखनेवालोंके मनोरंजन (दिलबहलाव) के लिअे जो आयोजन या कार्यक्रम बना है, अुसमें गाँवकी संस्कृति (तहजीब) को ही जगह दी गअी है। अलग अलग प्रान्तोंके देहाती नाच, गान, नाटक और संगीतका अिन्तजाम किया गया है।

प्रदर्शनीमें देखनेके लिअे क्या क्या रखा गया है, अिसकी तफसीलमें जाकर मैं ज्यादा समय नहीं लेना चाहता। सिर्फ विभागोंका अुल्लेख (जिक्र) कर देता हूँ। अुसमें अिस बात पर जोर दिया गया है कि कपड़ेकी जरूरत खुद पूरी कर लेनेके बारेमें कपड़ा बनानेके कपाससे लेकर बुनने तकके सब काम मेहनती आदमी अपने घर आसानीसे कैसे कर सकता है। पूनी बनानेके लिअे तुनाअीकी सब पद्धतियाँ (तरीके) बतलाअी हैं, और छोटे अरजका कपड़ा घर बैठे बुननेके लिअे अेक आसान छोटासा करघा भी यहाँ चलता दिखाअी देगा। खादी मंडपमें बापूजी और हिन्दुस्तानी नेताओंके हाथकते सूतके और अुससे बनी खादीके नमूने आप देख सकेंगे। ग्रामोद्योग विभागमें

www.vinoba.in

पीसना, धानसे चावल बनाना, हाथका कागज, देहातमें मिलनेवाले खारोंसे साबुन और ताड़ खजूरके रससे गुड़ बनाना, मधुमक्खी पालना वगैरा अुद्योग रखे गये हैं। अिनमें अब तक क्या तरक्की हुअी है, अिसका खयाल देखनेसे आ सकेगा। नअी तालीमके अलग अलग अंग प्रत्यक्ष दिखाये गये हैं। पूर्व बुनियादी, बुनियादी, अुत्तर बुनियादी तालीम, और शिक्षक तैयार करना — जिनकी पूरी जानकारी यहाँ मिलेगी। प्रत्यक्ष कुछ वर्ग चलाकर भी दिखाये जायँगे।

अिस बार प्रदर्शनीमें कुछ नअी बातें भी आयी हैं, जो अिसके पहले अैसी प्रदर्शनियोंमें नहीं थीं। अिनमें गो विभाग खास है। अिसमें खेती, खाद वगैरा भी है। अिस विभागका आयोजन हिन्द सरकार और गोसेवा संघकी मददसे किया गया है। अिसमें हिन्दुस्तानकी सभ्यता और जरूरतकी निगाहसे गायका महत्व, अुसकी आजकी गिरी हालत, अुसे सुधारनेके अुपाय, अुसके रास्तेमें रुकावटें, और अुसके बारेमें दूसरे कअी सवालोंकी तरफ जनताका ध्यान खींचा गया है। अिसी तरह खेती-विभागमें हिन्दुस्तानकी वर्तमान खाद्य समस्या (खुराकका सवाल), अुसे हल करनेकी दृष्टिसे समतोल खेती, खेतोंका अुपजाअूपन बढ़ानेकी अलग अलग क्रियायें, ट्रेक्टर बनाम बैल, बनावटी खाद बनाम गोबर और मैले पेशाबकी खाद, जमाया तेल बनाम कुदरती तेल और घी, कम्पोस्ट, साअिलेज़ वगैराका बोध करानेवाला विवेचन मिलेगा। प्रान्तकी सरकारोंने भी यहाँ अपने अपने खास विभाग रखे हैं। हिन्द सरकारने जो स्वास्थ्य (तन्दुरुस्ती) विभाग रखा है, अुसमे बीमारियोंसे बचनेके अुपाय और तन्दुरुस्ती सँभालनेमें रखी जानेवाली सावधानी बतलाअी है। अुसमें कोढ़के बारेमें अेक खास हिस्सा रखा गया है। अिसका आयोजन ब्रिटिश अेम्पायर लेप्रोसी अेसोसियेशन अिण्डियन कौंसिल और अखिल भारत कोढ़ समितिने किया है। आयुर्वेदिक वनस्पतियोंका भी प्रदर्शन किया गया है, जो देहातके आसपास बननेवाली चीजोंका अुपयोग बताती हैं। देहातका पाखानेका सवाल कैसे हल किया जाय, अिसके भी अलग अलग तरीके यहाँ बताये गये हैं। कस्तूरबा ट्रस्ट विभागमें छात्राओं और सेविकाओंके बनाये हुअे दस्तकारीके नमूने, कस्तूरबा ट्रस्ट कामकी तफसील बतानेवाले तख्ते, और खास घटनाओंके चित्र रखे गये हैं। कस्तूरबा फण्डका काम करनेकी जगह देहात हैं और अुसका मकसद देहाती औरतोंकी अुन्नति है। अिसके अलावा वहाँ हरिजन-विभाग और कुदरती अिलाजके अलग अलग हिस्सोंको भी जगह दी गअी है।

अेक खास विभाग राजस्थान-भवनका है, जिसमें यहाँकी — राजपूताना प्रान्तकी — कुदरत, समाज, संस्कृति, साहित्य (अदब) और कलाका प्रदर्शन है, ताकि अितिहासमें मशहूर अिस राजपूतानेका कुछ चित्र देखनेवालोंके खयालमें आ जाय। यहाँकी कारीगरीके कुछ नमूने भी देखनेको मिलेंगे।

अिच्छा थी कि अिस बार अेक आदर्श (नमूनेका) गाँव भी दिखाया जाय। पर वह हम पूरा न कर सके। जो कुछ बना है, अुसमें अेक किसानके घरका नमूना, बच्चों और स्वावलम्बी (अपनी जरूरतें खुद पूरी करनेवाले) गाँवकी आर्थिक व्यवस्थाके आँकड़े रखे गये हैं।

हमें स्फूर्ति मिलनेके लिअे बापू-भवन बनाया गया है। अुसमें अितिहासकी दृष्टिसे बापूके जीवनकी खास बातोंसे सम्बन्ध रखनेवाले चित्र हैं और अुनके अिस्तेमालकी कुछ चीजें भी रखी गअी हैं। अुसके पास प्रदर्शनीके पूरे समय तक कताअी चलती रहेगी और अैसे आयोजन भी होंगे, जिनमें आम लोगोंके साथ नेता लोग आकर कातेंगे।

यह प्रदर्शनीका बाहरी रूप हुआ। अब अुसके भीतरी रूपका कुछ विचार करें। यह प्रदर्शनी अेक खास विचारधाराके मुताबिक बनाअी गअी है। अिस विचारधाराके बारेमें गांधीजीने काफी लिखा और कहा है। यहाँ ज्यादा कहनेकी जरूरत नहीं है। पर अिन दिनों हालत कुछ बदली-सी दिखाअी देती है। देशमें कअी विचारधारायें चल रही हैं। यहाँ अुनकी बहसमें पड़ने या अुनकी तरफ या खिलाफ कुछ कहनेकी जरूरत नहीं है। फिर भी रचनात्मक कार्यकर्ताओंके मनमें क्या विचार अुठते हैं, हम कहाँ हैं, किधर जा रहे हैं, अिसका थोड़ेमें सिर्फ जिक्र कर देता हूँ।

हमें राजनीतिक (सियासी) आज़ादी मिली, पर वह अब तक जनताकी ताकत पर खड़ी नहीं हुअी है। अिसके अलावा, आर्थिक और सामाजिक आज़ादी मिलना बाकी है। देशको ताकतवर और मजबूत बनाना है। राजतंत्र (सरकार) कितना ही ताकतवर क्यों न हो, वह प्रजाके ताकतवर हुअे बिना कहाँ तक टिक सकता है? विदेशी हुकूमतको हटानेके लिअे जो रचनात्मक कार्यक्रम (तामीरी प्रोग्राम) बना था, वही आज़ादी पानेकी कोशिशमें और आज़ादी मिलनेके बाद भी आम जनताको बल देता रहेगा, अैसी धारणासे कांग्रेस और रचनात्मक संस्थायें रचनात्मक कार्यक्रम पूरा करनेके लिअे यथाशक्ति (ताकत भर) कोशिश करती रहीं। गुलामीके कारण अुसकी चाल बहुत धीमी थी। फिर भी आशा थी कि गुलामीमें बीज रूपमें ही बनी रहे, तो आज़ादी मिलनेके बाद वह बड़ी तेजीसे फूले-फलेगी। हुकूमत जनताकी सरकारके हाथमें आअी। बड़े बड़े कठिन सवाल देशके सामने खड़े हुअे। यह सही है कि रचनात्मक कामकी तरफ ध्यान देनेके लिअे बहुत ही कम फुर्सत मिली है। फिर भी सवाल यह है कि जो विचारधारा गांधीजीकी रहनुमाअीमें चली थी, अुस पर हम कहाँ तक जमे हुअे हैं, अुसे कामयाब बनानेके लिअे हम क्या खास कोशिश कर रहे हैं?

हिन्दुस्तान देहातका देश है। शिक्षा, तन्दुरुस्ती, अुद्योग-धन्धे अिन सबका विचार देहातकी दृष्टि (निगाह) से होना चाहिये। अिनमें गाँवके अुद्योग और घरेलू अुद्योग अपनी खास जगह रखते हैं। लगभग हमारी सब सरकारें भी चाहती हैं कि अैसे अुद्योग चलें। अुनके चलानेकी योजनायें (तजवीजें) बनती हैं। खर्च भी किया जा रहा है। पर साथमें अुनको नुकसान पहुँचानेवाले अुद्योगोंको भी पूरा बढ़ावा दिया जा रहा है। जिन देशोंमें बड़े बड़े कारखाने खूब चलते हैं, वहाँ भी घरेलू अुद्योग तो हैं ही। पर वे सब कला या शौककी चीजोंके लिअे होते हैं। कुछ लोगोंकी राय है कि हिन्दुस्तानमें भी अैसे ही गृहअुद्योग चलते रहें। पर अुतनेसे हिन्दुस्तानकी जनताको बल नहीं मिल सकेगा। क्योंकि अुस हालतमें अिन अुद्योगोंको दूसरी जगह मिलेगी। यहाँ तो आदमीकी बुनियादी जरूरतें पूरी करनेके लिअे गाँवके अुद्योग-धन्धोंको सबसे पहली जगह देना बहुत जरूरी है। अिसीसे सबकी फुर्सतका अुपयोग हो सकेगा, करोड़ोंको काम मिलेगा और शोषण (चूसना) मिट सकेगा।

अैसे अुद्योगोंसे बनी चीजें मशीनोंसे बनी चीजोंके बनिस्बत पैसेकी गिनतीमें महँगी तो दिखेंगी ही। जो चीजें दोनों तरहके अुद्योगोंसे बन सकती हैं, अुनके लिअे दोनों तरहके धन्धोंको बढ़ावा देनेके मानी ये होते हैं कि बाजारमें वे आपसमें लड़ लें; और जिनकी जिन्दा रहनेकी ताकत ज्यादा है, वे ही जिन्दा रहें और बाकी मर जायँ। जब नतीजा साफ दिखाअी देता है, तब दोनों तरहके अुद्योगों पर खर्च करके मदद लेनेसे क्या लाभ? यहाँ कुछ अैसे धन्धोंका जिक्र करें, जो बड़े पैमाने पर चलाये जा सकते हैं और जो सबके कामकी चीजें पैदा करनेवाले हैं। हाथकताअी और हाथ-बुनाअीको बढ़ावा देनेकी बात कही जा रही है। साथ ही अुनका नामोनिशान मिटानेकी ताकत रखनेवाली कपड़ेकी मिलोंकी भी खूब बढ़ती हो रही है। तेलकी बैलघानियाँ चलानेकी योजनायें बनती हैं और अमलमें लायी जाती हैं। साथ ही मशीनकी घानियाँ भी बैलघानियोंके मैदानमें खड़ी हो रही हैं। गुड़ अच्छा बनानेके

www.vinoba.in

लिअे खोज की जा रही है, गुड़ साफ कैसे बने अिसके प्रयोग गन्नेवालोंको समझाये जाते हैं, यह प्रचार (प्रोपेगेण्डा) हो रहा है कि शकरके बनिस्बत गुड़में ज्यादा पोषणकी ताकत है। साथ ही शकरके कारखाने बढ़ रहे हैं और अुनके कामके क्षेत्रमें गुड़ न बने अैसे कानून भी अमलमें लाये जाते हैं। ये अेक दूसरेके खिलाफ काम जनताको दुविधामें डाल रहे हैं। अिसका अेक कारण यह बताया जाता है कि लोगोंकी माँग पूरी करना हमारा फर्ज है। व्यापारी लोग अपने मतलबके लिअे लाखों रुपये खर्च करके जनतामें गैरजरूरी चीजें चलानेकी कोशिश करते हैं। वे जब चल निकलती हैं, तब अुन्हें माँगका रूप दे दिया जाता है। कुछ ही बरस हुअे, घीका रूप देकर लोगोंको धोखा हो अैसा जमाया हुआ तेल बड़ी मात्रा (मिकदार) में चलाया गया। और अब कहा जाता है कि अुसकी माँग है, अिसलिअे वनस्पति घीको अब रोक नहीं सकते हैं।

देशके भाग्यविधाताओं (तकदीर बनानेवालों) को सोचना चाहिये कि सिर्फ लोगोंकी पसन्द, बुरी आदत या माँगका ही खयाल रखकर अैसे नुकसानदेह धन्धे चलने दें, या जिनमें लोगोंका सच्चा भला है, वे ही काम होने दें। देशकी आर्थिक (माली) व्यवस्थामें राज चलानेवालोंका असरकारक हाथ रहेगा ही। 'राजा कालस्य कारणम्' (राजा समयका बनानेवाला है), यह बात जितनी पुराने जमानेमें सच थी, अुससे वह आज कुछ कम सच नहीं है। अुलटे, ज्यादा ही सच दिखाअी देती है। कठिन हालतोंके कारण हुकूमतका हाथ हमारे चूल्हे तक पहुँच गया है। हमारी सब सरकारें देहातकी भलाअी चाहती हैं, फिर भी अिस बारेमें अुनका कामका तरीका अैसे अुद्योगोंको बढ़ानेवाला नहीं दिखाअी देता। हमारी सरकारें हमसे अलग नहीं हैं। आज लोकशाही हुकूमत चल रही है। अुसमें जो कुछ खामियाँ हैं, अुन्हें जनताको तालीम देकर अुसकी रायकी ताकत पर दूर करना है। अिसमें शायद देर लगे, रुकावटें भी आवें, कभी यश मिले, कभी न मिले। पर जिस बातमें हमें विश्वास है, अुस पर डटे रहकर भरसक कोशिश करना है। हमारा विश्वास है कि यह प्रदर्शनी अुसमें काफी मददगार साबित होगी।

यह प्रदर्शनी तमाशे जैसी चीज नहीं है। यह सबसे अच्छी शिक्षा लेनेकी जगह है। साथ ही अिसका मकसद यह है कि यहाँकी बातें अमलमें लाकर जनता अिससे फायदा अुठावे। आज देशमें जरूरी चीजोंकी तंगी है। अुन्हें बढ़ानेकी जीतोड़ कोशिश हो रही है। हम देखते हैं कि थोड़े लोग कल कारखानोंके जरिये अुनके बनानेपर जोर दे रहे हैं। ग्रामोद्योगोंका भी नाम लिया जाता है, पर वे पनप सकें अैसी व्यवस्था कहाँ है? आम जनताको अपने लिअे जरूरी चीजें बनानेका मौका मिलनेसे अुसका संगठन और ताकत बढ़ेगी। यहाँ अैसे अुद्योग आँखोंके सामने करके दिखाये जा रहे हैं, जिनके लिअे अगर देशमें ठीक हालत पैदा की जाय, तो अुनमें करोड़ों औरत मर्द हिस्सा ले सकते हैं और अपनी कभी जरूरतोंको खुद पूरा कर सकते हैं। और आज सब जगह जो आलस फैला हुआ है, अुसे हटानेमें बड़ी मदद मिल सकती है।

सब तरफसे आवाज अुठ रही है कि हम गांधीजीका अधूरा काम पूरा करनेकी कोशिश करें। अुन्होंने हमारे सामने अहिंसक समाजकी रचनाकी यानी रामराज्यकी तसबीर रखी है। रचनात्मक कामको अुसका प्राण बतलाया है। अिस प्रदर्शनीका संगठन अुसी नींव पर किया गया है। अगर अुनका अधूरा काम पूरा करना है, तो यहाँ बतलाये हुअे सारे काम, जो अुनकी सीखका सार हैं, बड़े पैमानें पर किये बिना वह पूरा कैसे होगा? हम भगवानसे प्रार्थना करें कि अिस प्रदर्शनीका जनता ठीक ठीक अध्ययन करे और अुसे गांधीजीका अधूरा काम पूरा करनेकी प्रेरणा (बढ़ावा) मिले।

अैसी बातें न मानी जायँ

अेक भाअी लिखते हैं, जिसका मतलब यह है:

"अेक साहब हैं, जो रूहों (आत्माओं) को अेक दूसरी रूहके जरिये बुलवाते हैं। वे साहब अेक कागज और पेन्सिल रख देते हैं, और जो सवाल आपने लिखकर अपने पास सरब मुहर (सीलबन्द) रख लिया हो, अुसका जवाब आपने जिस आत्माको बुलाना चाहा हो, वह अुस पेन्सिलके जरिये लिख देती है। मैंने गांधीजीको बुलवाया और गांधीजीकी रूहने मेरे सवालोंका जवाब लिखा और सही जवाब लिखा। बहुत प्यार मुहब्बतके लफ्ज मेरे लिअे लिखे। और लिखा कि परेशान न होना। अेक महीनेके बाद मैं तुमसे और बातें करूँगा। मैं दूसरी दुनियामें मुझसे जो कुछ हो सकता है कर रहा हूँ। अक्सर लोगोंका खयाल है कि गांधीजी अब दुनियामें रूहोंके जरिये काम कर रहे हैं। खुदा करे यह सच हो।"

पाठकोंसे मेरी अर्ज है कि कोअी अैसी बातोंमें यकीन (श्रद्धा) न रखें। अैसे खेल मैंने बहुत देखे हैं, घण्टों तक बातें भी की हैं। लेकिन सोचने पर मालूम हुआ है कि अिसका किसी मरे हुअे आदमीकी रूहसे सम्बन्ध (निस्बत) नहीं। अिसमें सिर्फ अपना या अपने आसपासके किसी आदमीका या जिसने रूहको बुलानेका वह साधन तैयार किया हो, अुसके मनका खेल होता है, और यह ताक़त हिप्नोटिज़म, मेस्मेरिज़मके प्रकारकी है। अिसमें मार्केकी अेक बात यह है कि जो जवाब मिलते हैं, वे हमेशा अैसे ही मिलते हैं जो पूछनेवालेको सही मालूम हों। यानी, जैसा जवाब पूछनेवाला चाहता है, वैसा ही मिलता है। दूसरी बात यह है कि ये सब मरी हुअी आत्माओंको ही बुला देते हैं, कोअी जिंदी आत्माको नहीं बुलाते!

कअी लोग अिन बातों पर अितना भरोसा करने लग जाते हैं कि पागल-से हो जाते हैं। मेरी रायमें अिन बातों पर श्रद्धा (अीमान) रखना खुदाके साथ दूसरे देवको बिठानेके बराबर ही है। जो अेक परमेश्वरकी ताकतको मानता है, अुसे किसी मरे हुअे आदमियोंकी ताकत पर भरोसा रखनेकी ज़रूरत नहीं। और मान लें कि अुन्हें बुलाया जा सकता है, तो भी बुलानेकी जरूरत नहीं। अुनकी शांतिको हम क्यों तोड़ें?

बम्बअी, ११-१२-'४८ **किशोरलाल मशरूवाला**

गांधी साहित्य सूची

GANDHIANA

संयोजक: **पांडुरंग गणेश देशपांडे**

अिसमें गांधीजीकी और अुनके बारेमें लिखी हिन्दी, अुर्दू, गुजराती, बंगाली, संस्कृत वगैरा हमारे देशकी भाषाओंमें और अंग्रेजी भाषामें छपी हुअी किताबोंकी तफसीलवार यादी दी गयी है।

कीमत: रु० ३-४-० डाकखर्च ०-८-०

नवजीवन कार्यालय, अहमदाबाद

विषय-सूची

		पृष्ठ
मानव-सेवक	... रवीन्द्रनाथ ठाकुर	३५७
हिन्दुस्तानकी राजभाषा — सफाअी	... राजेन्द्रप्रसाद	३५७
अेक सही शिकायत	... किशोरलाल मशरूवाला	३५९
सर्वोदय प्रदर्शनी	... विनोबा	३६०
चौथा तरजुमा	... किशोरलाल मशरूवाला	३६१
सर्वोदय प्रदर्शनी	... श्रीकृष्णदास जाजू	३६२
अैसी बातें न मानी जायँ	... किशोरलाल मशरूवाला	३६४
टिप्पणी		
मध्यप्रान्त और बरारमें ग्राम-सुधार	... जे० सो० कुमारप्पा	३५९

www.vinoba.in